होली

होली का त्यौहार जाड़े के अन्त में आता है | यह फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है | यह त्यौहार आपसी भाईचारे का त्यौहार है |

कहते हैं कि इस दिन हिरण्यकश्यप की बहन होलिका भक्त प्रहलाद को मारने के लिए चिता में लेकर बैठी थी | होलिका को आग में न जलने का वरदान प्राप्त था | परन्तु इस चिता में होलिका जल गई और प्रहलाद बच गया | इसी खुशी में यह त्यौहार मनाया जाता है |

उस दिन बालक घर-घर से लकड़ियाँ माँगते हैं और एक स्थान पर इकट्ठी कर देते हैं | उस बड़े देर को होली कहते हैं | स्त्रियाँ व्रत रखती हैं | बच्चे अच्छे-अच्छे कपड़े पहनते हैं और ख़ुशी-ख़ुशी अपनी माता के साथ होली पर जाते हैं | वहाँ पर होली का पूजन होता है | फिर होली में आग लगा दी जाती है | वहाँ पर बालक और जवान, स्त्री-पुरुष और बूढ़े सभी इकट्ठी होते हैं | वे चने और गेहूँ की बालों को भूनकर घर लाते हैं |

दूसरे दिन “फाग” मनाते हैं | सभी लोग स्त्री, पुरुष, लड़के-लड़कियाँ हँसते-गाते-नाचते हैं | वे एक-दूसरे पर रंग डालते हैं और गुलाल मलते हैं | फिर एक-दूसरे के “गले” मिलते हैं | इस दिन लोग आपसी शत्रुता भूलकर एक-दूसरे के मित्र बन जाते हैं | यह उत्साह, मस्ती का त्यौहार है |

1- Metindeki cümlelerin yapısı incelenerek, çevirisi yapılacaktır.